राज कॉमिक्स

संख्या 0089

बांकेलाल का कमाल

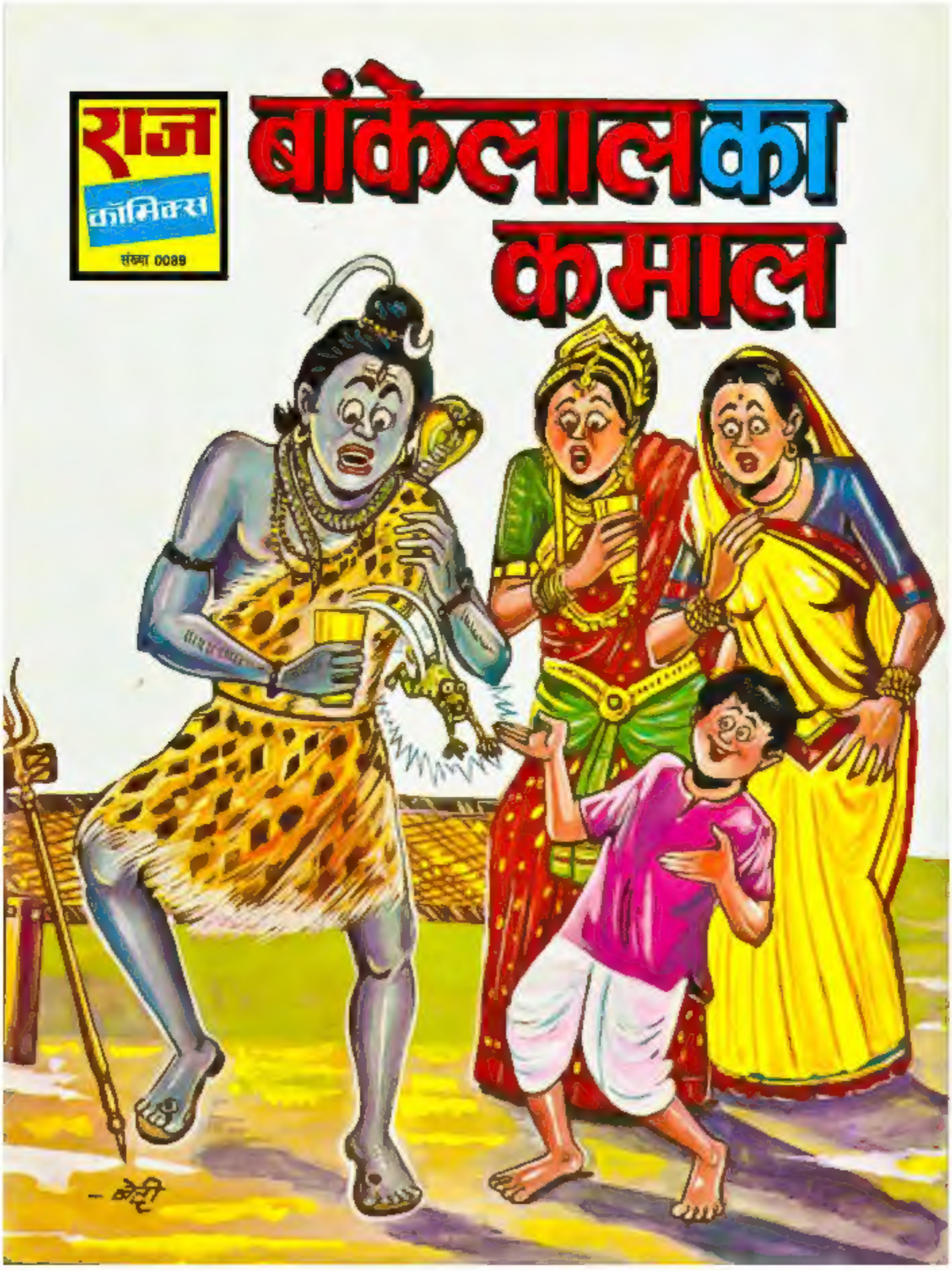

– केवी

बांकेलाल का कमाल
चित्रांकन - बेदी - कहानी - गोविन्दर मुनेजा - सम्पादक - मनीष चंद्र गुप्त
बहुत समय पहले की बात है। रामपुर गांव में एक गरीब आदमी ननकू, अपनी पत्नी गुलाबवती के साथ रहा करता था। ननकू दिन भर गांव के जमींदार के खेतों में काम करता था...
... और शाम को काम के बदले उसे जो अनाज मिल जाता था, पति-पत्नी उसे खाकर संतुष्ट रहते थे।
गुलाबवती प्रतिदिन रात को सोने से पहले छोटे भगवान शिव की पूजा किया करती थी।
ओऽम नमः शिवाय
ओऽम नमः शिवाय

उस समय भगवान शिव कैलास पर्वत पर पार्वती जी के साथ बैठे बातें कर रहे थे जब-
ओऽम नमः शिवाय
ओऽम नमः शिवाय
स्वामी ! यह कौन है, जो नित्य इस समय आपको याद करती है ?
यह मेरी सच्ची पुजारिन की पुकार है !
सच्ची पुजारिन ! यह आप कैसे कह सकते हैं कैलास-पति ?
मैं समझ गया प्रिये, कि तुम क्या चाहती हो...
...तुम स्वयं पृथ्वी पर चलकर मेरी पुजारिन से मिलना चाहती हो, हम तुम्हारी यह मनोकामना अवश्य पूरी करेंगे !
...और फिर उस रात गुलाबवती ने जैसे ही पूजा समाप्त कर आरती बोली-
अरे, भगवान आप मैया पार्वती के साथ !! मैं तो धन्य हो गई !
हम तुम्हारे भक्तिभाव से बेहद प्रसन्न है गुलाबवती ! मांगो क्या मांगती हो ?
प्रभु ! आपके दर्शनकर मैंने सब कुछ पा लिया। फिर भी आपकी कृपा-दृष्टि मुझ पर है, तो आप मुझे एक पुत्र दे दें !
एवमस्तु !
और इसी के साथ भगवान शिव और पार्वती अलोप हो गए।

खुशी-से झूमती गुलाबवती ने जब यह बात सोते हुए ननकू को जगाकर बताई तो वह भी मारे खुशी के उछल पड़ा।
त...तुम सच कह रही हो भाग्यवान... म... मैं... बा...प बनूंगा!
जी!
वर्ष बीतने से पहले ही गुलाबवती ने एक पुत्र को जन्म दिया।
हे भगवान, आज मैं कितना खुश हूं! भगवान! मैंने तो इसका नाम भी सोच लिया है, बांकेलाल... क्यों कैसा रहेगा?
वाह! कितना सुन्दर नाम सोचा है आपने!
फिर बांकेलाल अपने पिता के प्यार एवं मां की ममता की छांव में बड़ा होने लगा।
और बांकेलाल जब सात-आठ वर्ष का हुआ तो, पिता के लाड़-प्यार ने उसे शरारती बना दिया।
हाय मैया!
झटाक
उन्हीं दिनों भगवान शिव, पार्वती जी के साथ आकाश मार्ग से उधर से गुजर रहे थे कि –
नाथ! आपको याद है न, कुछ वर्ष पूर्व आपने इस गांव की एक स्त्री को पुत्र प्राप्ति हेतु वर दिया था।
प्रिये, मैं अपने भक्तों को कभी नहीं भूलता!

नाथ ! मैं आपके आशीर्वाद का फल, यानि उस बालक को देखना चाहती हूं !
अवश्य प्रिये !
और अब भगवान शिव पार्वती के साथ गुलाबवती के घर पहुंचे, तो उस समय घर में बांकेलाल और गुलाब..!! थे। ननकू रखेतो पर काम करने गया हुआ था।
भगवन ! आ... आप आइए, भीतर चल कर विराजिए !
नहीं गुलाबवती, हम अब चलेंगे ! हम तो सिर्फ इस बालक को देखने आए थे !
ऐसा कैसे हो सकता है मैया, आज तो आपको इस गरीब का आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा !
बहुत इंकार करने के बाद, आखिर में उन्हें गुलाबवती की बात माननी ही पड़ी !
और उस समय गुलाबवती के घर में तो कुछ था नहीं, किन्तु वह पड़ोस के घर से थोड़ा दूध मांग लाई और उसे गरम कर दो गिलासों में डाला। और फिर –
उस ईस उसी तो दूध गर्म है ! जब तक यह ठण्डा होता है, मैं प्रभु के दर्शन ही क्यों न कर लूं !
और जैसे ही गुलाबवती रसोई से बाहर निकली, रखेलता हुआ बांकेलाल रसोई में पहुंचा –
अरे ! ये मेंढक कहां से आया ?
शरारती बांके-लाल ने मेंढक पकड़ा...
... और दूध से भरे दो गिलासों में से एक में डाल दिया
हुं, अब आएगा मजा !

थोड़ी ही देर बाद वह मेंढक वाला दूध से भरा गिलास शिव के हाथ में था तभी–
अरे ये क्या?
???
दूध में मेंढक!
ही-ही-ही
बाले को मुस्कराता देख, भगवान तुरन्त समझ गए कि यह शरारत इसी ने की है। अतः –
वह क्रोधित हो उठे।
उद्दंड बालक! तूने मुझ शुद्ध शाकाहारी को धोखे से मांस का अर्क पिलाने की कोशिश की, जा मैं तुझे शाप देता हूं, तू हमेशा निकम्मा और शरारती रहेगा!
गुलाबवती चीख पड़ी–
नहीं प्रभु, नहीं, बालक की शरारत का इतना कठोर दण्ड न दें– हां प्रभु, अपना शाप वापस ले लें अन्यथा मैं अपना सिर आपके चरणों में पटक-पटक कर जान दे दूंगी!
स्वामी क्षमा कर दीजिए! अबोध बालक की शरारत का दण्ड अपनी भक्त को क्यों दे रहे हैं?
तब–
मेरा शाप मिट तो नहीं सकता, किन्तु इसका प्रभाव इस तरह कम हो सकता है कि –
– यह लड़का जो भी शरारत करेगा, उससे इसे कोई हानि नहीं पहुंचेगी, बल्कि कुछ लाभ ही होगा। ऐसे ही शरारतों के लाभ से इसका जीवन यापन होगा!
क्या?
इसके बाद शिव तो पार्वती के साथ चले गए। लेकिन–

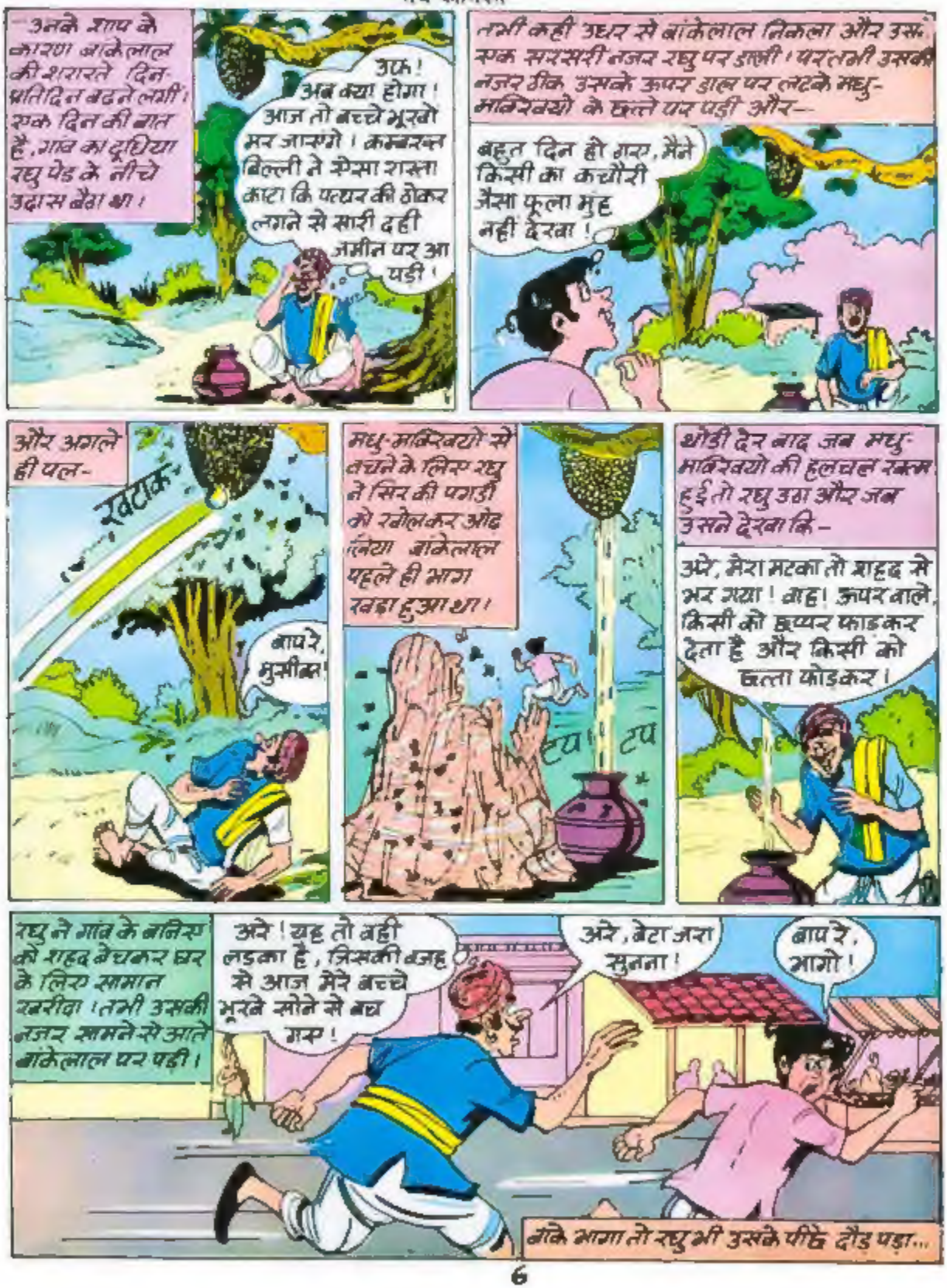
उनके शाप के कारण बांकेलाल की शरारतें दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगीं। एक दिन की बात है, गांव का दूधिया रघु पेड़ के नीचे उदास बैठा था।
उफ़! अब क्या होगा! आज तो बच्चे भूखों मर जाएंगे। कमबख्त बिल्ली ने ऐसा रास्ता काटा कि पत्थर की ठोकर लगने से सारी दही जमीन पर आ पड़ी।
तभी कहीं उधर से बांकेलाल निकला और उसकी एक सरसरी नजर रघु पर डाली। पर तभी उसकी नजर ठीक उसके ऊपर डाल पर लटके मधु-मक्खियों के छत्ते पर पड़ी और--
बहुत दिन हो गए, मैंने किसी का कचौरी जैसा फूला मुंह नहीं देखा!
और अगले ही पल-
खटाक
बाप रे, मुसीबत!
मधु-मक्खियों से बचने के लिए रघु ने सिर की पगड़ी को खोलकर ओढ़ लिया। बांकेलाल पहले ही भाग खड़ा हुआ था।
टप टप
थोड़ी देर बाद जब मधु-मक्खियों की हलचल खत्म हुई तो रघु उठा और जब उसने देखा कि -
अरे, मेरा मटका तो शहद से भर गया! वाह! ऊपर वाले किसी को छप्पर फाड़कर देता है और किसी को छत्ता फोड़कर।
रघु ने गांव के बनिए को शहद बेचकर घर के लिए सामान खरीदा। तभी उसकी नजर सामने से आते बांकेलाल पर पड़ी।
अरे! यह तो वही लड़का है, जिसकी वजह से आज मेरे बच्चे भूखे सोने से बच गए!
अरे, बेटा जरा सुनना!
बाप रे, भागो!
बांके भागा तो रघु भी उसके पीछे दौड़ पड़ा...

और जल्दी ही उसे पकड़ लिया।
अब तो फंस गया बेटा बांके, आज तेरी खैर नहीं!
बेटा, आज तेरी ही वजह से मेरे घर का चूल्हा जलेगा। बेटा तो शहद पूरे दस सिक्कों में बिका...
और तू ले यह एक सिक्का, और मौज कर...
!!!
एक सिक्का बांकेलाल को देकर रघु चलता बना, और...
बांकेलाल–
बेईमान कहीं का! मेरी वजह से फायदा इसे दस का हुआ और देकर गया मुझे एक सिक्का कम से कम याचतो देता।
बांकेलाल के पड़ोसी लालू व चालू, जो गांव में बेहद शरीफ समझे जाते थे, वास्तव में पक्के चोर थे। उन्होंने आजकल अपने व आस-पड़ोस के गांवों में जबरदस्त सफाई अभियान चलाया हुआ था। एक दिन सुबह मुंह अंधेरे ही गांव के लाला सुरवीराम के घर झाड़ू फेर कर लौटे और फिर चोरी का माल अपने घर के पिछवाड़े दबाकर, उस स्थान की पहचान के लिए वहां पर एक आम का पौधा लगा दिया। और अंदर जाकर चैन की नींद सो गए। और सुबह जब बांकेलाल की निगाहें उसी आम के पौधे पर पड़ी तो–
हूं, तो पड़ोसी आम खाएंगे, और हम ललचाएंगे – नहीं ऐसा कदापि नहीं हो सकता। मैं इस पौधे को जड़ से उखाड़ दूंगा!

और जैसे ही बांकेलाल ने पौधे को उखाड़ा–
अरे, बाप रे! सोने के सिक्के!
तभी लालू-चालू भी वहां पहुंच गए।
ओह! इस कमबख्त की वजह से तो हमारी पोल खुल जाएगी।
हां, अब इसका जिन्दा रहना ठीक नहीं।
तभी बांकेलाल की नजर उन पर पड़ी-तो वह दौड़कर दीवार के पार कूदा।
जिन्दा नहीं बचना चाहिए!
बाप रे भागो!
लेकिन जल्दबाजी में वह दूसरी तरफ गिर गया। ठीक तभी सुरवीरसिंह के घर हुई चोरी की जांच करने स्वयं नगर कोतवाल, सैनिकों सहित उधर से गुजर रहा था।
हाय मैं मरा!
क्या बात है बेटा, तुम इतने घबराए हुए क्यों हो?
ज-जी-वो
उसी समय चारदीवारी पर लालू-चालू प्रकट हुए और बाहर सैनिकों को देखकर घबरा गए।
क्या मतलब? ये हमें देखकर घबरा क्यों रहे हैं? जरूर दाल में कुछ काला है!
खतरा! भाग बे चालू!

और फिर–
सैनिको! पकड़ो उन दोनों को!
सैनिक जल्दी ही लालू-चालू को पकड़ लाए।
अब जल्दी ही अपनी राम कहानी, अपनी जुबानी बता डालो, वरना..
हमें माफ कर दीजिए!
...फिर लालू-चालू ने अपने अपराध स्वीकार कर लिए...
... और साथ ही अब तक की सारी चोरियों का माल भी उनके हवाले कर दिया तब–
अरे, बाप रे! ये तो पुराने छाछ हैं।
और तो नहीं है कुछ?
नहीं हुजूर!
दूसरे दिन नगर कोतवाल के कहने पर सभा का आयोजन किया गया।
भाइयो! आपके गांव के बांकेलाल ने बहुत पुराने चोरों को पकड़वा कर अनेक चोरियों का माल दिलवाया है। ऐसे शातिर चोरों को पकड़ना बहुत मुश्किल था। मैं चोरी के माल में से दसवां भाग बांकेलाल को इनाम में देता हूं।
वाह! भई वाह! बांकेलाल ने तो कमाल कर दिया!
ननकुआ का लड़का तो कमाल का निकला!

और इस तरह शरारतें करना और उसके लाभ उठाता हुआ बाकेलाल बड़ा हो गया। लेकिन बाकेलाल का दुर्भाग्य था कि ननकू व गुलाबवती पिछले ही वर्ष उसे अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गए थे। दूर-दूर के गावों में भी उसकी प्रसिद्धि फैल चुकी थी।

बारिश का मौसम था। बाकेलाल अपने घर के आंगन में चारपाई पर बैठा कोई नई शरारत करने की योजना बना रहा था।

तभी वह कुछ सोचते सोचते चुटकी बजाकर उछल पड़ा।

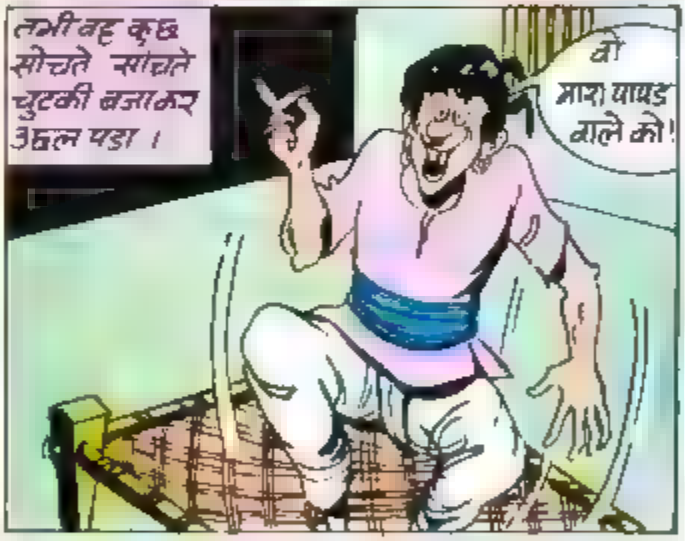

और फिर तुरन्त ही अपने दिमाग में आई नई योजना को कार्यरूप देने के लिए वह गांव के मुखिया के घर की ओर चल दिया।

बाकेलाल का कमाल

मुरलिया जी हाट के बाहर ही नीम के पेड़ पर कुछ लोगों के साथ बैठे किसी मामले पर विचार कर रहे थे। तभी बाके लाल उनके सामने कुछ परेशान सा हुलिया बनाए पहुंचा।
राम राम मुरलिया जी
राम राम बाकेलाल! आओ बैठो! कहो, कैसे आना हुआ? सब खैरियत तो है?
मुरलिया जी मेरी तो खैर है पर पर
बात यह है मुरलिया जी कि आज शाम तक अपने गांव में एक भयानक मुसीबत आने वाली है
!?
क्या बात है? बाकेलाल तुम हिचकिचा क्यों रहे हो?
बाकेलाल की बात सुनकर वहां पर मौजूद सारे लोग हैरान हो उठे।
कैसी मुसीबत?
तुम कहना क्या चाहते हो बाकेलाल?
तबाही विनाश बर्बादी
बाकेलाल के मुंह से तबाही विनाश बर्बादी जैसे शब्द सुनकर गांव वालों के मुंह से चीख निकल पड़ी।
आखिर बात क्या है? तुम किस तबाही या बर्बादी की ओर संकेत कर रहे हो बाकेलाल?

मुरलीया जी, बात दरअसल यह है कि कल रात शंकर भगवान ने मुझे सपने में दर्शन दिए और कहा कि आज रात तक इस गांव
!!!
मे भयानक बाढ़ आने वाली है, जिससे सारा गांव यानी मै डूब जाएगा।
???
कोई उपाय भी बताया उन्होंने इस मुसीबत से बचने का?
जी हा
भगवान शंकर ने मुझसे सपने मे कहा कि सारे गांव वाले अपने अपने घरो को छोड कर ऊचे टीलो पर पहुच जाएं। इसी मे सबका कल्याण है।
ओह, ठीक है बाके लाल! तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद! तुमने समय रहते यह खबर
देकर बहुत बड़े पुण्य का काम किया है मै अभी यह खबर गांव
मै पहुंचाए देता हू। और आप सब लोग तो अपने वाले संभय की गम्भीरता से परिचित हो ही चुके है अत आप लोग अपने घरो मे जाकर बचाव की तैयारी करे।
ठीक है मुरलिया जी चलो भाइयो।

और इसके साथ ही बाँके लाल अपनी योजना के सफल न होने की आशा में मन ही मन खुश होता हुआ अपने घर की ओर चल दिया।
वाह! क्या शक्तिबाण चलाया है।
और घर पहुंचकर
हा हा हा हो हो हो खूब
मूर्ख बनाया मैंने मुखिया को। अब आएगा मजा। सारे गांव वाले अपने अपने घरों को छोड़कर गांव से बाहर ऊंचे टीलों पर चले जाएंगे और मैं उनके घरों में घुसकर
अच्छा खासा माल बटोर लाऊंगा और जब कल मुखिया जी मुझसे कहेंगे बाढ़ नहीं आई तो कह दूंगा मैं क्या करूं, जैसा मुझे सपना आया था, मैंने आपसे बता दिया था। हा हा हा
और यहाँ सब सोचते हुए वह सो गया।
उधर गांव के भोले भाले लोग मुखिया जी द्वारा मेघ गर्जन संदेश को सुनकर गांव छोड़ने की तैयारी कर ही रहे थे कि तभी आकाश में काले काले बादल गरजने लगे।
ओह! इतना खराब मौसम
अरे भोले मुखिया जी ने सच ही कहलवाया है, ऐसी भीषण बरसात मैंने पहली बार देखी है
मुन्ने की मा जल्दी करो बस अपने मतलब का थोड़ा बहुत सामान ले लो और निकल चलो ऊंचे टीले की ओर
आप मुन्ने को पकड़िए मैं सामान समेटती हूं।

और कुछ ही देर बाद -
भागो जल्दी करो !
हे भगवान रक्षा करो
कृपा करो लालाजी
कुछ देर बाद जब पूरा गांव निर्जन हो चुका था लालेलाल अपने घर से निकल कर बारिश में भीगता हुआ गांव के महाजन के घर की ओर चल दिया ।
अरे वाह ! यह तो सोने पर सुहागा हो गया । गांव वाले इस बारिश को देखकर मेरी बात को सच समझ रहे होंगे । और मुझे भी ऐसे सुहावने मौसम में लोगों का घर साफ करने में अलग ही मजा आएगा ।
सबसे पहले मैं गांव के महाजन लाला हरदयाल के घर में घुस कर उसका माल समेटूंगा, क्योंकि उसके यहां काफी मोटा माल मिलने की उम्मीद है ।
इधर गांव वाले टीले पर पहुंचे और बरसात से बचने की व्यवस्था करने लगे ।
तभी एक जगह लबू के लिए बांस गाड़ रहे तीन चार व्यक्तियों के पास एक औरत घबराई हुई आई ।
रामू के बप्पा व व दो
क्या बात है कमला ? तुम कुछ परेशान सी नजर आ रही हो ।

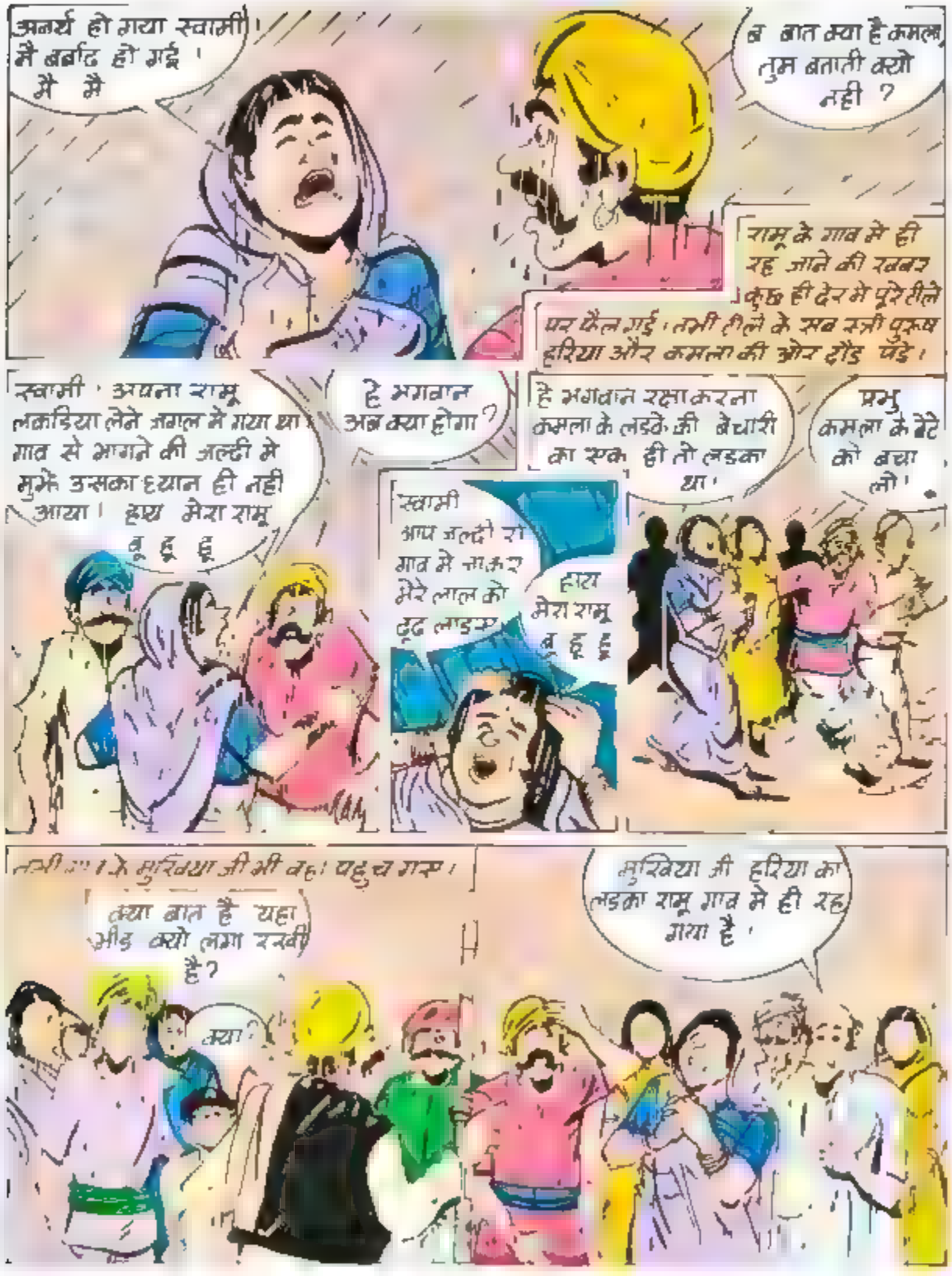
अनर्थ हो गया स्वामी! मैं बर्बाद हो गई। मैं मैं
ब बात क्या है कमला तुम बताती क्यों नहीं ?
रामू के गांव में ही रह जाने की खबर कुछ ही देर में पूरे टीले पर फैल गई। तभी टीले के सब स्त्री पुरुष हरिया और कमला की ओर दौड़ पड़े।
स्वामी। अपना रामू लकड़िया लेने जंगल में गया था। गांव से भागने की जल्दी में मुझे उसका ध्यान ही नहीं आया। हाय मेरा रामू बू हू हू
हे भगवान अब क्या होगा ?
हे भगवान रक्षा करना कमला के लड़के की बेचारी का एक ही तो लड़का था।
प्रभु कमला के बेटे को बचा लो।
स्वामी आप जल्दी से गांव में जाकर मेरे लाल को ढूंढ लाइए
हाय मेरा रामू बू हू हू
तभी ... के मुखिया जी भी वहां पहुंच गए।
क्या बात है यहां भीड़ क्यों लगी हुई है?
मुखिया जी हरिया का लड़का रामू गांव में ही रह गया है।
क्या?

उफ ! अब तो बारिश भी तेज है ! और तूफान भी जोरो पर है ! समझ नही आता
ऐसा करो तुम चार-पाच लोग हरिया के साथ गाव जाकर रामू को ढूंढ कर लाने की कोशिश करो
हरिया तीन चार लोगो के साथ गाव की ओर चल दिया

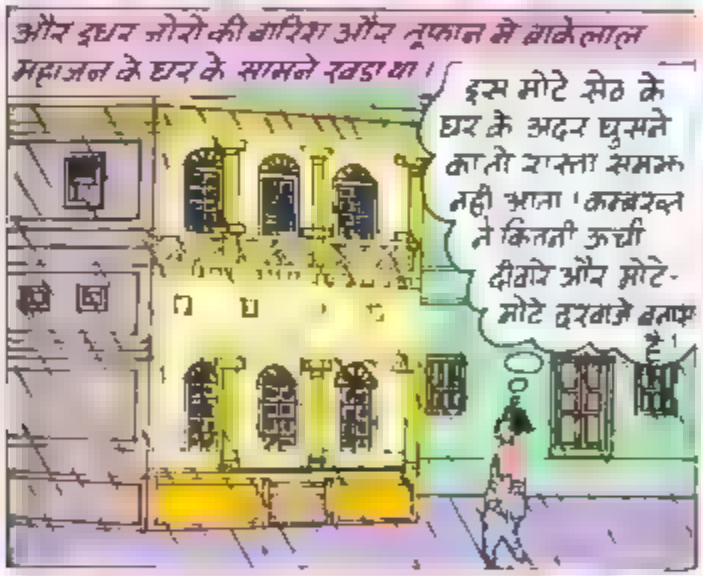
और इधर जोरो की बारिश और तूफान मे बाकेलाल महाजन के घर के सामने खडा था !
इस मोटे सेठ के घर के अदर घुसने का तो रास्ता समझ नही आता ! कमबख्त ने कितनी ऊची दीवारे और मोटे-मोटे दरवाजे बनाए है !

तभी कुछ सोचकर -
हू अगर किसी तरह छत पर पहुच जाऊ तो शायद अदर घुसने का कोई मार्ग मिल जाए !

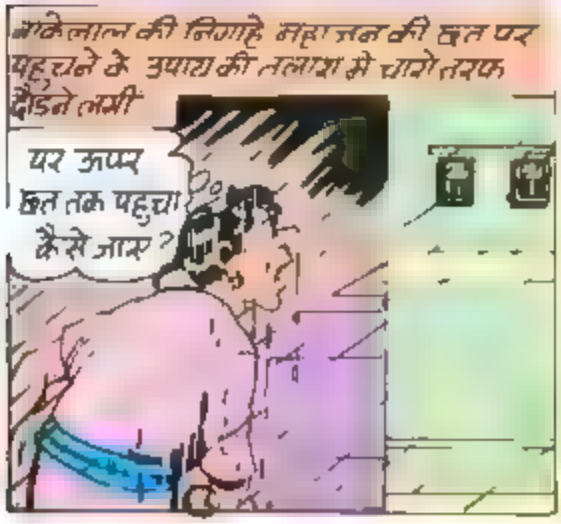
बाकेलाल की निगाहे महाजन की छत पर पहुचने के उपाय की तलाश मे चारो तरफ दौडने लगी
पर ऊपर छत तक पहुचा कैसे जाए ?

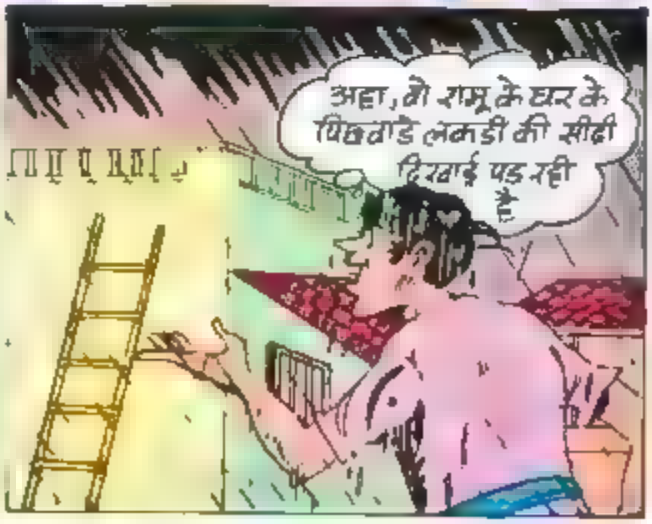
अहा, वो रामू के घर के पिछवाडे लकडी की सीढी दिखाई पड रही है

और अगले ही पल बाकेलाल रामू के घर के पिछवाड़े पड़ी लकड़ी की सीढ़ी को उठा लाया।
और फिर सीढ़ी महाजन के मकान की दीवार पर लगा कर उस पर चढ़ने लगा।
उधर रामपुर गांव के पास बहने वाली नदी में बाढ़ का पानी खतरे के निशान से ऊपर पहुंच गया।
अब महाजन के घर के आंगन में उतरने के लिए सीढ़ी लाकर यहां लगानी पड़ेगी।
और तभी भयंकर बाढ़ से नदी का बांध भयानक आवाज करता हुआ टूट पड़ा।
धड़ाम
धड़ाम

उस नदी का पानी पूरी तेजी के साथ रामपुर गाव की ओर बढने लगा।
बाकेलाल अभी महाजन की छत पर खड़ा सीढ़ी ऊपर खीच ही रहा था कि पानी का रेला उसकी तरफ तेजी से बढ़ा
और फिर उसके पैर छत से उखड गए –
हाय मैं मरा
उधर हरिया और उसके साथी जब रामू की तलाश मे गाव मे जाने के लिए टीले के किनारे पर पहुचे तो गाव का दृश्य देखकर चौंक पड़े।
हाय! यह तो पूरा का पूरा गाव ही डूब गया।
हा, और अब तो पानी टीले की ऊचाइयो को छूने लगा है।
भगवान का शुक्र है हम लोग समय रहते ही सुरक्षित ऊचे टीले पर पहुच गए।

हां वरना शायद हममे से एक भी जीवित नही बचता। सबके सब इस बाढ मे डूब मरते।
मै कहता हू भला हो बांकेलाल का, जिसने समय रहते खतरे की सूचना देकर पूरे गाव को मरने से बचा लिया।
तभी हरिया को लगा कि, जैसे उसका रामू पानी मे डूबता हुआ उसे पुकार रहा है। और
न नही मेरे लाल तू चिन्ता मत कर मै आ रहा हू।
बचाओ बचाओ बापू मुझे बचा लो।
और अचानक हरिया मृदविक्षिप्त सा पानी की ओर दौड पडा।
मेरे बेटे, मेरे रहते तुझे कुछ नही हो सकता मै मै — आ रहा हू
अभी हरिया पानी मे छलाग लगाने ही वाला था कि उसके साथियो ने उसे पकड लिया।
ये क्या पागलपन है हरिया?
छोड दो मुझे व वह देखो मुझे मेरा बेटा बुला रहा है।

होश मे आओ हरिया ! देखो, हम तुम्हारे साथी है

होश मे कैसे आऊ ? हाय मेरा लाल बू हू हू

हरिया रोता पछाड़े खाता वही बेहोश हो गया। और अपने साथियो की बांहो मे झूल गया।

ओह! लगता है बेटे के गम मे होश खो बैठा है!

उधर बाँके लाल पानी के बहाव के साथ साथ डूबता उतरता हुआ एक तरफ बहा चला जा रहा था।

बुड़क बुड़क

जब वे तीनो बेहोश हरिया को लेकर कच्चे टीले पर पहुचे अपने पति की बेहोशी और पूरे गाव के डूब जाने की खबर सुन और अपने बेटे रामू के जीवित रहने की रही सही आस खोकर कमला जोर जोर से रोने लगी।

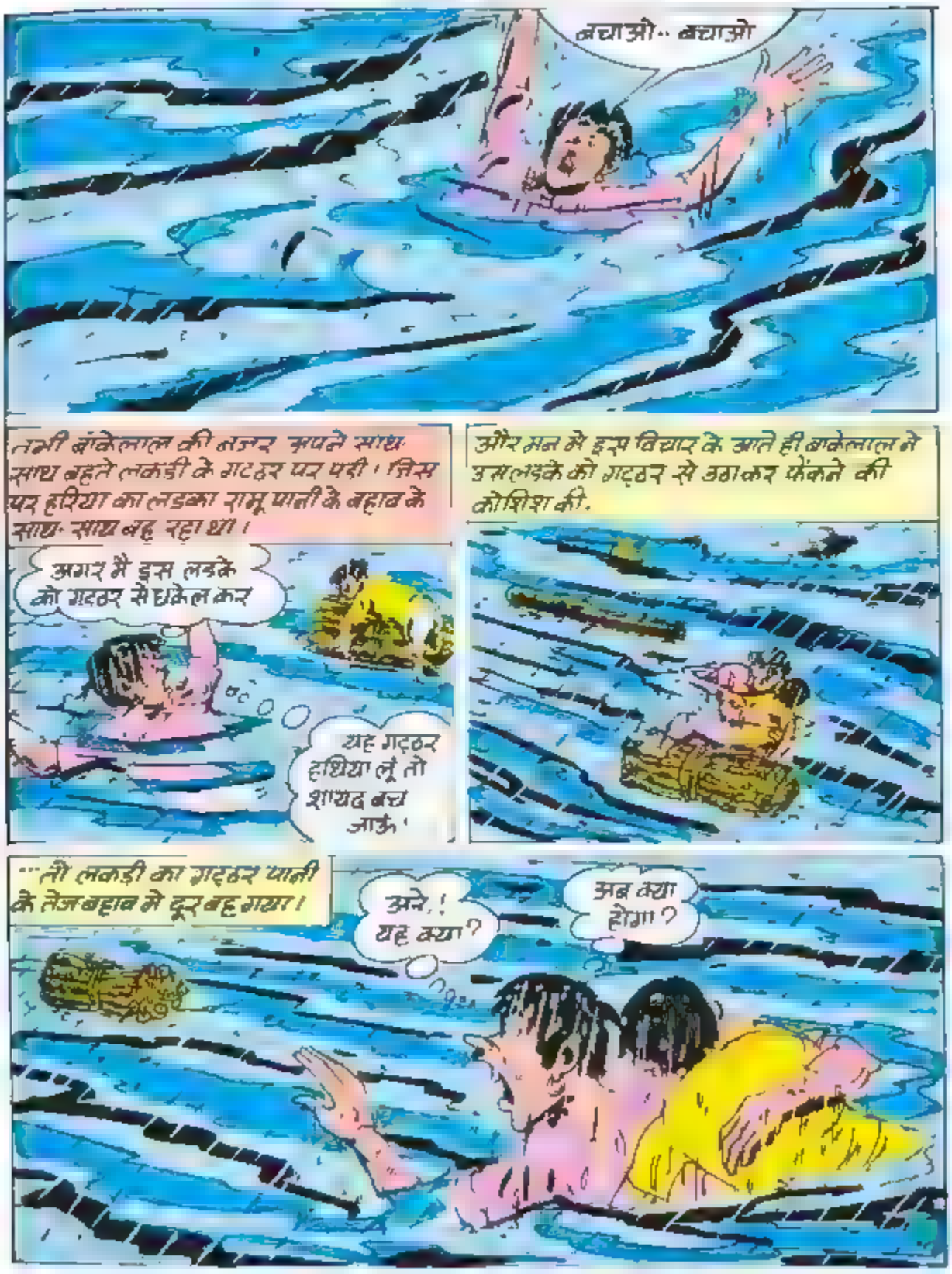
बचाओ.. बचाओ
तभी बाकेलाल की नजर अपने साथ साथ बहते लकड़ी के गट्ठर पर पड़ी। जिस पर हरिया का लड़का रामू पानी के बहाव के साथ-साथ बह रहा था।
अगर मैं इस लड़के को गट्ठर से इकेला कर
यह गट्ठर हथिया लूं तो शायद बच जाऊं।
और मन में इस विचार के आते ही बाकेलाल ने उस लड़के को गट्ठर से उठाकर फेंकने की कोशिश की.
...तो लकड़ी का गट्ठर यानी के तेज बहाव में दूर बह गया।
अरे..! यह क्या?
अब क्या होगा?

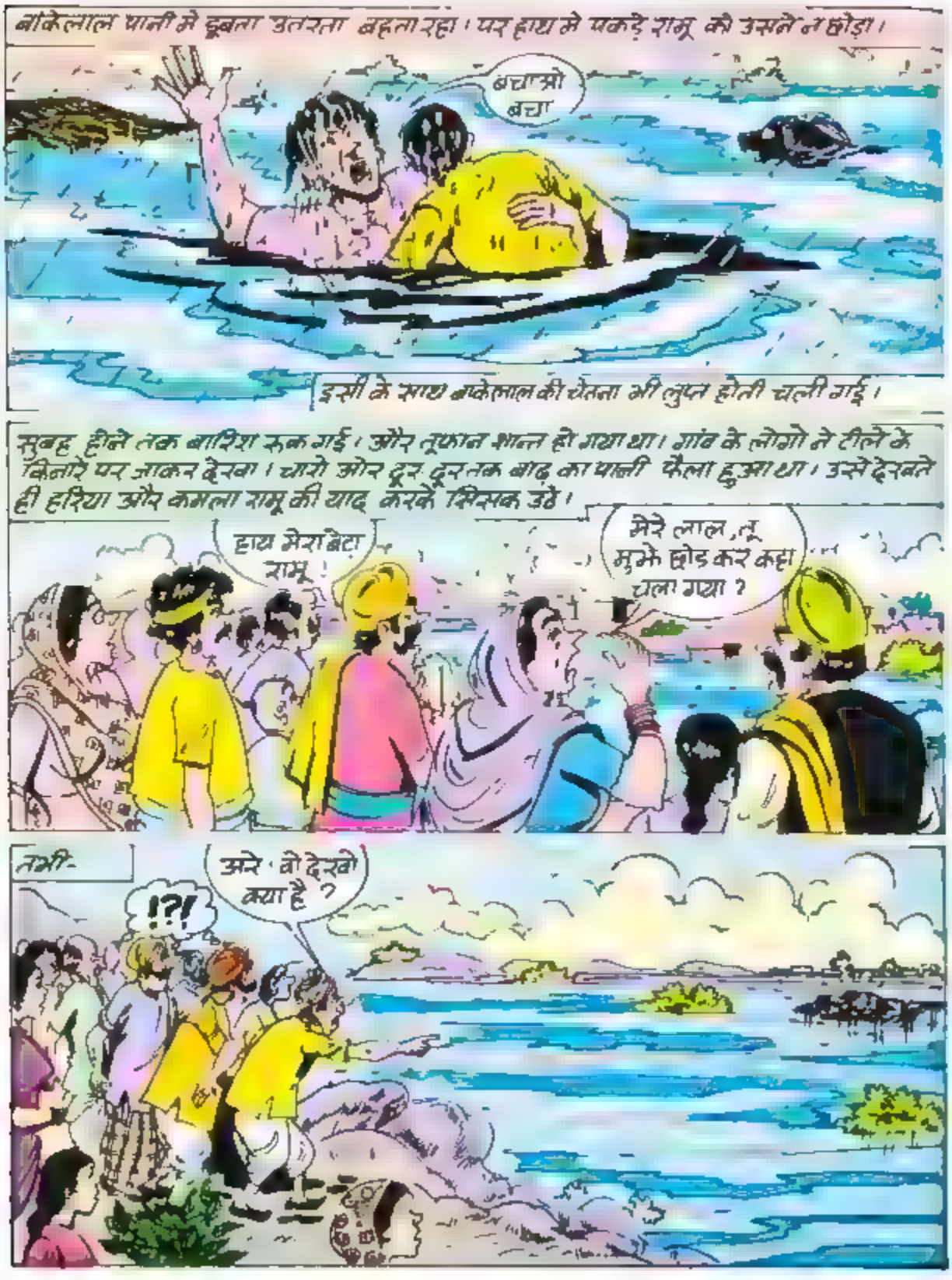
बांकेलाल पानी में डूबता उतराता बहता रहा। पर हाथ में पकड़े रामू को उसने न छोड़ा।
बचाओ बचा
इसी के साथ बांकेलाल की चेतना भी लुप्त होती चली गई।
सुबह होने तक बारिश रुक गई। और तूफान शान्त हो गया था। गांव के लोगों ने टीले के किनारे पर जाकर देखा। चारों ओर दूर दूर तक बाढ़ का पानी फैला हुआ था। उसे देखते ही हरिया और कमला रामू की याद करके सिसक उठे।
हाय मेरा बेटा रामू !
मेरे लाल, तू मुझे छोड़ कर कहां चला गया ?
तभी-
!?!
अरे, वो देखो क्या है ?

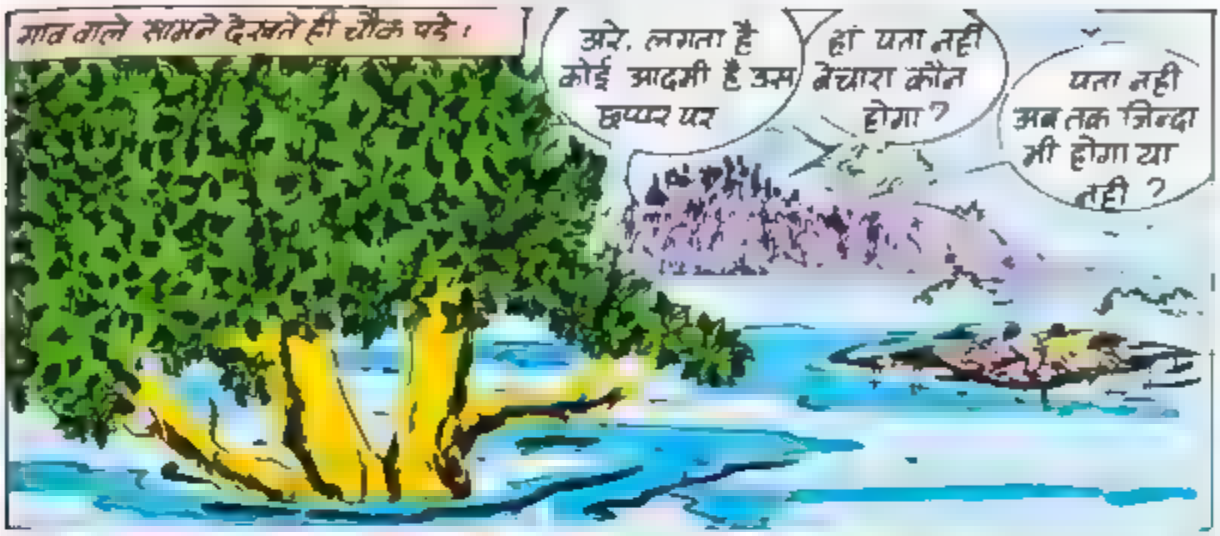
गांव वाले सामने देखते ही चौंक पड़े।
अरे, लगता है कोई आदमी है उस छप्पर पर
हां पता नहीं बेचारा कौन होगा?
पता नहीं अब तक जिन्दा भी होगा या नहीं?

एक पल के लिए हरिया और कमला भी गम भूलकर उत्सुकतावश उधर ही देखने लगे।

कुछ देर बाद छप्पर स्वतः ही बहता हुआ किनारे आ गया।
अरे, इस पर तो बाकेलाल और हरिया का लड़का है
अरे, हां आश्चर्य है
!!??

हरिया और कमला अपने बेटे को सामने देख, एवं उसे मरा हुआ जानकर उसके ऊपर गिर पड़े।
हाय! मेरा लाल! बू हू हू

लोगों ने गांव का बूढ़ा वैद्य, बाकेलाल और रामू के उठते-गिरते शरीर को एक ही नजर में ताड़ गया।
अरे जल्दी करो! इन दोनों को किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दो ताकि मैं इनका उपचार कर सकूं।
पर पर वैद्य जी ये तो

नहीं, दोनों अभी जिन्दा है, देखो नहीं रहे, इनकी साँसे चल रही है।
ओह! शुक्र है भगवान का
फिर गाव वाले बेहोश रामू और बाके लाल को उठा-कर तम्बू मे ले आए और वैद्य जी उनका उपचार करने लगे फिर थोड़ी ही देर मे पहले बाके लाल की चेतना वापस लौटी।
आह
उसने अभी अपनी आखें हल्की सी खोली ही थी कि गाव वालो की भीड़ देख कर उसने अपनी आखे पुन बन्द कर ली।
ये गाव वाले मुझे क्यो घेरे खड़े है और मै यहा कैसे आया?
फिर शीघ्र ही चेतना खोने के पूर्व की पूरी स्थिति बाके लाल के मस्तिष्क मे घूम गई।
ओह! लगता है गाव वालो ने मेरा झूठ पकड लिया है। तभी ये सब मुझे घेरे खड़े है अब इनसे कैसे जान बचाई जाए?

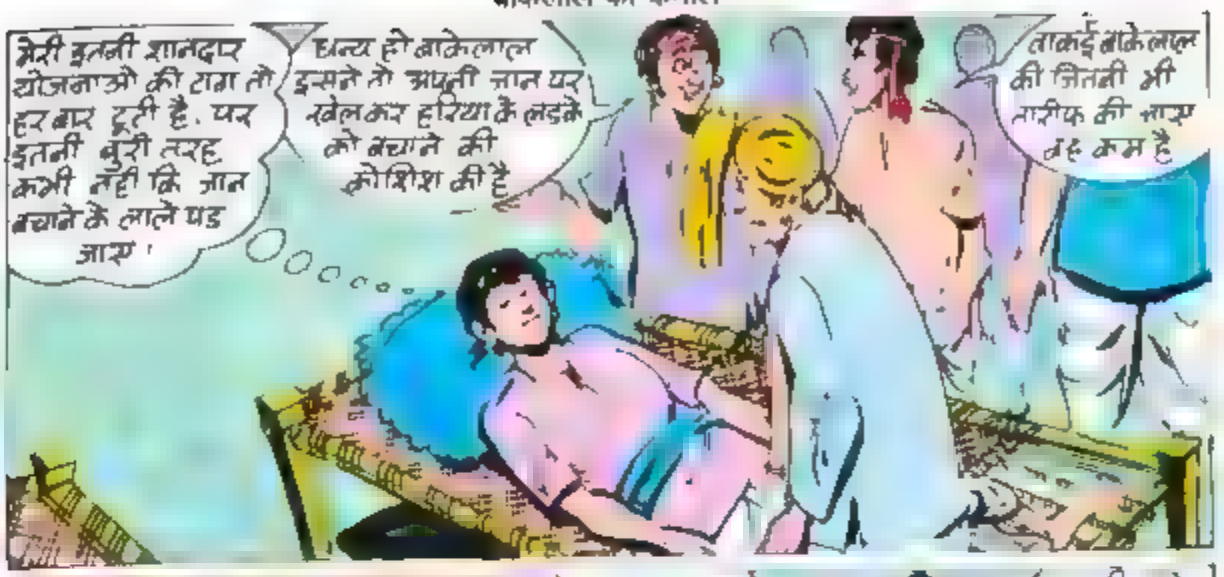
मेरी इतनी शानदार योजनाओं की टांग तो हर बार टूटी है, पर इतनी बुरी तरह कभी नहीं कि जान बचाने के लाले पड़ जाएं।
धन्य हो बांकेलाल इसने तो अपनी जान पर खेलकर हरिया के लड़के को बचाने की कोशिश की है
ताकई बांकेलाल की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है

आदमी बनने किस लेते हुए बांकेलाल ने जब गांव वालों की बातें सुनीं तो बहुत हैरानी हुई। वह लोगों से जान बचाने के उपाय सोच रहा था और कहा-
एक हरिया के लड़के शामू को ही क्यों, इसने तो सारे गांव को इस मुसीबत से बचाया।
हूं, तो यह बात है

हां, जो अगर बांकेलाल इस बात की पहले ही सूचना न देता तो शायद हममें से कोई भी जीवित न बचता
सच ही बांके लाल तो हमारे लिए ईश्वर का वरदान है।
अरे! कम्बख्तो जो अगर सच ही मुझे पता होता कि अ..र ही इस गांव में बाढ़ आने वाली है तो मैं तुम लोगों को कभी न बताता बल्कि मैं तो

तुम लोगों को मरने के लिए गांव में छोड़ कर खुद गांव से निकल जाता और जब तुम सब लोग मर-खप गए होते तो मैं अकेला पूरे गांव का बेताज बादशाह होता। और फिर
तुम लोगों के घरों को खोद-कर उनमें से सारा माल पानी हथिया लेता, पर सत्यानाश हो इस बाढ़ का जो असमय ही आकर मेरी शानदार योजना का बेड़ागर्क कर गई।

नमी बूढ़े वैद्य का अथक परिश्रम रंग लाया। और हरिया के बेटे रामू की चेतना भी वापस लौट आई।
आह अम्मा।
ओह! शुक्र है भगवान का वह आंखें खोले
हां, हरिया तुम्हारा रामू तो अब खतरे से बाहर है
म मेरा रामू बच गया। व वो अभी अभी बोला था न वैद्य जी?
और बांकेलाल को भी अब तक होश में आ जाना चाहिए। जाने क्या बात है? नब्ज तो इसकी ठीक चल रही है
जब बांकेलाल के मन में छिपा भय खत्म हुआ तो उसने भी कराहते हुए आंखें खोलीं।
आह म मैं कहां हूं? और हरिया का लड़का रामू कहां है?
तुम अब सुरक्षित हो बांके लाल। और हरिया का लड़का भी सकुशल है।
हे ईश्वर तू बड़ा दयालु है।
बांकेलाल के होश में आते ही गांव के लोग प्रसन्न हो गए।
भई बांकेलाल जैसे नेक पुरुष के ऊपर ईश्वर की विशेष कृपा होती है
ईश्वर देवता स्वरूप बांकेलाल जी को लम्बी उम्र दे।

एक सप्ताह के बाद का सारा पानी निकल गया तो सब लोग गांव में पहुंचे। टूटे फूटे मकानों की मरम्मत करने के बाद जब रामपुर गांव का जन-जीवन कुछ हद तक सुधरा तो गांव वालों ने मिलकर चौपाल पर एक सभा आयोजित की–
बाकेलाल, आज तुम्हारे ही कारण हम सब लोग सलामत है। तुमने अपनी जान पर खेलकर रामू को बचाया।
बाकेलाल, भइया हम तुम्हारे इस पुण्य भरे कार्य की जितनी भी तारीफ करें, कम है और हम गांव के सब लोगों की तरफ से आपको यह स्वर्ण आभूषण भेंट करते है।
य यह आप लोग?
ले लो बेटा यह तो सप्रेम भेंट है।
सत्यानाश हो इस बाढ़ का। वरना मैं इतनी थोड़ी सी नहीं पूरे गांव की दौलत का अकेला मालिक होता।
ठीक है, आप लोग इतना कहते है तो मैं भला कैसे इंकार कर सकता हूं।
और सारे रामपुर वासी बाकेलाल के मन में उठ रहे असल विचारों से अनभिज्ञ उसे प्रशंसात्मक दृष्टि से देख रहे थे।
वाकई में देवता-स्वरूप इंसान है बाके।
वाह! क्या विचार है बाकेलाल के।

उधर विशालगढ के राजा विक्रमसिंह का दरबार लगा हुआ था। इसी दरबार में तरह-तरह की चर्चाओं के बीच महाराजा विक्रमसिंह बाबेलाल के एक दो कारनामे सुनकर इतना प्रभावित हुआ कि
"मंत्री धरमसिंह! आप फौरन सैनिकों के साथ रामपुर गाव जाकर बाबेलाल को सम्मान राज अतिथि के रूप मे लिवा कर लाएं।"
जो आज्ञा महाराज!
एक बात और! राजअतिथि को आते समय किसी प्रकार का कष्ट न हो, इस बात का विशेष ख्याल रखा जाए।
आज्ञा का पालन पूरी निष्ठा से किया जाएगा!
और फिर कुछ देर बाद मंत्री धरमसिंह एक सुन्दर रथ और पांच घुड़सवार सैनिकों के साथ रामपुर गाव की ओर चल पड़ा।
और उधर बाबेलाल अपने घर मे नई शरारत के लिए मन ही मन कोई योजना बना रहा था।
अब किसकी और कैसे खाट खड़ी की जाए, जिससे मेरी जिन्दगी के दिन फिर जाएं?
कि तभी- खट-खट
कौन है भई?
भला कौन हो सकता है?

हम हैं विशालगढ़ के सैनिक!
हे भगवान! ये सैनिक लोगों का मुझसे क्या काम? हो न हो किसी ने मेरी कोई शिकायत की है जो ये मुझे गिरफ्तार करने आए हैं।
बांकेलाल! दरवाजा खोलो! बाहर मंत्री जी आपको बुला रहे हैं।
हे भगवान अब क्या होगा?
...जरूर कोई घपला हो गया है जो स्वयं मंत्री जी मुझे गिरफ्तार करने आए हैं। पर क्या घपला हुआ है मुझसे?
और सैनिकों ने देर होती देख जोर से दरवाजा भड़भड़ाया।
दरवाजा खोलो! नहीं तो तोड़ दिया जाएगा।
खतरा! अब मुझे फौरन भाग निकलना चाहिए।
बांकेलाल दरवाजे को इस तरह भड़भड़ाए जाने पर और भी बुरी तरह डर गया और खिड़की की ओर लपका।
पर तभी बाहर निकलते ही मंत्री धरमसिंह की नजर उस पर पड़ी।
देखो, वो बांकेलाल के घर की खिड़की से कौन भाग रहा है? मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है। तुम दौड़ कर उसे पकड़ लाओ।

फिर शीघ्र ही वह सैनिक बांकेलाल को पकड़ लाया।

कौन हो तुम और भाग क्यों रहे थे?

ज...जी, मेरा नाम बांकेलाल है। और...

क्या?

क्या?

मंत्री के संकेत पर सैनिकों ने फौरन बांकेलाल को छोड़ दिया।

बांकेलाल जी! हम आप ही को साथ ले जाने आए हैं।

प...पर... मेरा कसूर?

मंत्री धरमसिंह मुस्कराकर बोला--

आपको किसी अपराध के लिए नहीं, बल्कि सम्मानित करने के लिए महाराज ने बुलवाया है।

डरे हुए बांकेलाल को मंत्री के शब्द व्यंग्यात्मक प्रतीत हुए।

हुंह! महाराज भला मुझे क्यों सम्मानित करने लगे! अवश्य ही मेरे अनगिनत अपराधों में से किसी एक का भण्डाफोड़ हुआ है। जो ये यमदूत मेरे पीछे पड़े हैं?

क्या सोचने लगे...? चलिए जल्दी कीजिए!

प...पर मैं तो आपके साथ नहीं जाऊंगा मेरी तबियत ठीक नहीं है।

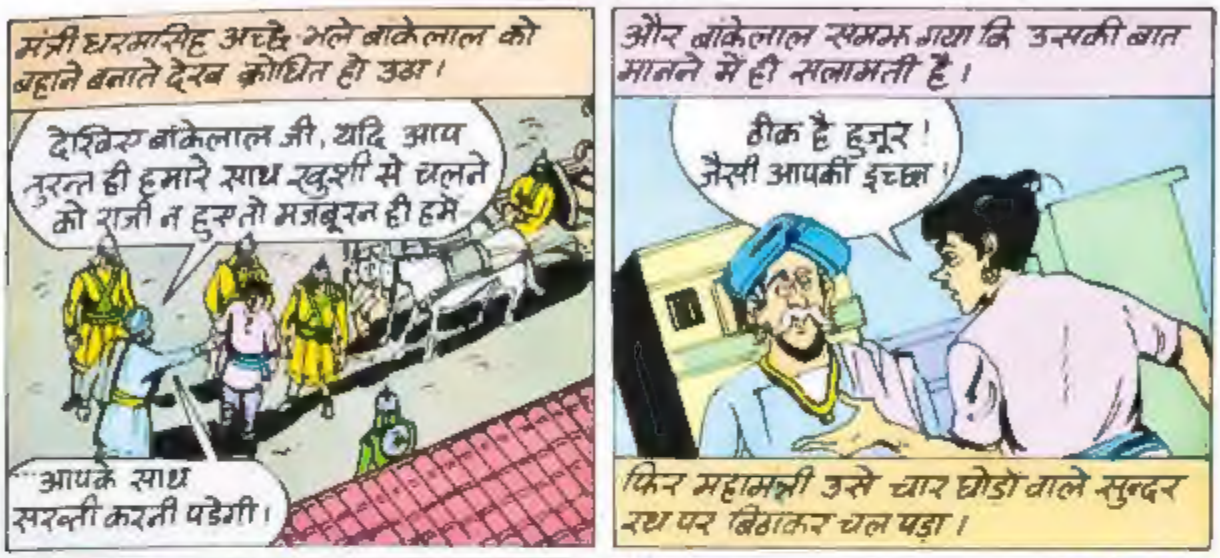
मंत्री धरमसिंह अच्छे भले बांकेलाल को बहाने बनाते देखकर क्रोधित हो उठा।
देखिए बांकेलाल जी, यदि आप तुरन्त ही हमारे साथ खुशी से चलने को राजी न हुए तो मजबूरन ही हमें
आपके साथ सख्ती करनी पड़ेगी।
और बांकेलाल समझ गया कि उसकी बात मानने में ही सलामती है।
ठीक है हुजूर! जैसी आपकी इच्छा।
फिर महामन्त्री उसे चार घोड़ों वाले सुन्दर रथ पर बिठाकर चल पड़ा।

और जब मंत्री धरमसिंह बांकेलाल को लेकर विशालगढ़ के राजमहल में पहुंचा तो रात हो चुकी थी। अतः बांकेलाल को राजा के विशेष कक्ष में ले जाया गया।
आइए बांकेलाल जी, आपका स्वागत है! हमने आपकी बहुत तारीफें सुनी हैं।
जी... जी, यह तो आपकी महानता है, जो आप इस नाचीज को किसी काबिल समझते हैं।

नहीं बांकेलाल, न तो हमें किसी की झूठी तारीफ करने की आदत है, न सुनने की। हां, हमने तुम्हारे लोक-कल्याण के कई कारनामे सुने हैं और सुना है, तुमने पूरा गांव डूबने से बचाया है।
हूं, तो यह बात है! मैं तो बेकार ही डर गया था।

मंत्री जी ! आप तुरन्त बांकेलाल के जलपान का प्रबन्ध कराएं !
जो आज्ञा महाराज !
आहा ! शाही दावत मजा आ गया !
धरमसिंह कमरे से बाहर चला गया।
हां, तो बांकेलाल जी अब बताएं कि आपको यहां तक आने में किसी प्रकार की तकलीफ तो नहीं हुई ?
ज...जी कोई खास तो नहीं।
क्या मतलब ? देखो बांकेलाल ! मैंने मंत्री धरमसिंह को विशेषकर यह निर्देश दिया था कि वह तुमको सम्मान सहित हमारे पास लेकर आए...और इस बात का विशेष ख्याल रखे कि तुमको रास्ते में कोई तकलीफ न हो...
...और तुम शायद नहीं जानते कि हम राज-आज्ञा का उल्लंघन करने वाले किसी राजकर्मचारी या अधिकारी को फौरन राजपद से हटा देते हैं।
क्या ?
राजा विक्रम की बात सुनकर बांकेलाल चौंक पड़ा।

और तभी उसकी उलटी खोपड़ी में एक नई शरारत ने जन्म लिया।
यदि मैं महाराज से कह दूं कि यहां लाते समय उसके राजमंत्री ने मेरे साथ बहुत बुरा सलूक किया, तो महाराज उसे तुरन्त ही मंत्री पद से हटा देंगे और...
उसकी जगह जो नया मंत्री बनेगा, वह मुझसे निश्चित तौर पर खुश होगा, क्योंकि वह अपने मंत्री बनने का कारण मुझे मानेगा। और हो सकता है वह मुझसे खुश होकर कुछ इनाम-इकराम वगैरह भी मुझे दे दे !

क्या बांकेलाल की इस शरारत के कारण मंत्री धरमसिंह को अपना पद छोड़ना पड़ा या फिर भगवान शिव के वरदान के कारण उसे बहुत लाभ हुआ ?

जानने के लिए पढ़ें

कर भला हो गला

इसी सैट में प्रकाशित